सत्र 2018–19 से प्रस्तावित (संशोधित दिनांक 20.08.2018)

बी.ए. प्रथम वर्ष

संस्कृत साहित्य

प्रथम प्रश्नपत्र

टीप – बी.ए. प्रथम वर्ष में संस्कृत साहित्य के दो प्रश्न–पत्र होंगें एवं दोनों प्रश्न –पत्र 75– 75 अंकों के होंगें ।

नाटक, व्याकरण और अनुवाद पूर्णांक – 75

इकाई –1	स्वप्नवासवदत्तम् – व्याख्या	अंक – 15
इकाई –2	स्वप्नवासवदत्तम् – समीक्षात्मक प्रश्न	अंक – 15
इकाई –3	1. सुबन्त (शब्दरूप) – राम, मुनि, भानु, पितृ, करिन्, कर्तृ, आत्मन्, लता, मति, नदी, धेनु, मातृ, फल, वारि, सर्व, तद्, एतद्, यद्, इदम्, अस्मद्, युष्मद् । 2. तिङन्त (धातुरूप) – भ्वादि, दिवादि, तुदादि, चुरादि गण के अतिरिक्त अस् एवं कृ धातुओं के लट्, लृट्, लङ्, लोट् एवं विधिलिङ् लकारों के रूप 3. अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्न	अंक – 15

नोट– शब्द रूप एवं धातु रूप के विकल्प के रूप में अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्न भी पूछे जा सकते है ।

इकाई –4	प्रत्याहार, संज्ञा, सन्धि और विभक्त्यर्थ	अंक – 15
इकाई –5	हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद	अंक – 15

अनुशंसित ग्रन्थ –

1. रचनानुवाद कौमुदी – डा. कपिलदेव द्विवेदी
2. संस्कृतस्य व्यावहारिकस्वरूपम् – डा. नरेन्द्र, श्री अरविन्द आश्रम
3. संस्कृतव्याकरण – श्रीधर वसिष्ठ
4. संस्कृत में अनुवाद कैसे करें – उमाकान्त मिश्र शास्त्री, प्रकाशक – भारती भवन
5. लघु सिद्धान्त कौमुदी – श्री महेश सिंह कुशवाहा, प्रकाशक – चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

सत्र 2018–19 से प्रस्तावित

बी.ए. प्रथम वर्ष

संस्कृत साहित्य

द्वितीय प्रश्नपत्र

गद्य, कथा एवं साहित्येतिहास पूर्णांक – 75

इकाई –1	शुकनासोपदेशः – व्याख्या	अंक – 15
इकाई –2	हितोपदेशः (मित्रलाभः) – व्याख्या	अंक – 15
इकाई –3	शुकनासोपदेश एवं हितोपदेश के समीक्षात्मक प्रश्न	अंक – 15
इकाई –4	वैदिक एवं पौराणिक साहित्य का सामान्य परिचय (वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदांगों एवं पुराणों का संक्षिप्त परिचय)	अंक – 15
इकाई –5	निम्नलिखित कवियों का परिचय – महाकवि कालिदास, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, विशाखदत्त, बाणभट्ट, शूद्रक, विशाखदत्त, भवभूति ।	अंक – 15

अनुशंसित ग्रन्थ –

1. शुकनासोपदेश – प्रकाशक – मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी
2. हितोपदेश (मित्रलाभ) – प्रकाशक – मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी
3. वैदिक साहित्य और संस्कृति – आचार्य बलदेव उपाध्याय
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास – आचार्य बलदेव उपाध्याय
5. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – डा. राधावल्लभ त्रिपाठी, वि.वि. प्रकाशन, सागर, म.प्र.